अध्ययन 7

आत्मा, प्राण और देह

मनुष्य में आत्मा, प्राण और देह है । हमें इन में से हर एक के कार्य के विषय जानना चाहिए । ये भाग हम में किस प्रकार कार्य करता है तथा किस प्रकार एक दूसरे के साथ सम्बन्ध रखता है ।

मनुष्य की आत्मा

"क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है ।" (यूहन्ना 3:6)

जिस प्रकार हम ने शरीर में जन्म लिया , हमारे मानवीय आत्मा जो तात्कालिक है जिसका उद्देश्य व्यर्थ है । यह प्रभाव रहित है । क्योंकि हम आत्मिक तौर से मरे हुए है । हमारे परमेश्वर के साथ कोई बातचीत नहीं हो पाती है या उसके साथ संगति ही हो पाती है । क्योंकि हमारी मानवी आत्मा जीवित नहीं है । क्योंकि हमने नया जन्म नहीं पाया है ।

यीशु ने कहा ,"यदि कोई नये सिरे से न जन्में तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता है।" (यूहन्ना 3:3)

हमारी आत्मा उस समय तक असली प्रभाव नहीं दिखा पाती जब तक आत्मिक नया जन्म न आ जाए । जब हम परमेश्वर को अपने लिये जान जाएगे, तथा हम उसकी सुनने और उस से बात करने के योग्य हो जाते हैं व्यक्तिगत रीति से । हमारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर बन जाती है क्योंकि परमेश्वर हम में निवास करने के लिये आ गया है, इसीलिए हमारी आत्मा को परमेश्वर का चेतना, हमारा भाग परिभाषित किया जा सकता है या हमारी अन्दर के स्थान जिस में पवित्र आत्मा निवास कर सकता है ।

प्राण

प्राण हमारे जीवन के तीन क्षेत्रों से बना है :

क. मन–हमारा सोच विचार तथा मानसिक बुद्धि सम्बन्धी विधि

ख. भावना–हमारा स्नेह तथा चेतना ।

ग. अभिलाषा–जो कुछ हम करते है उसको चुनना तथा निर्णय करने की हमारी क्षमता ।

प्रभु यीशु के शब्द, उसकी शिक्षा में 'प्राण' या 'जीवन' अनुवाद प्रभु किया जा सकता है । प्राण एक स्वाभविक मनुष्य के अलौकिक भाग है व्यक्ति जो है, उसका व्यक्तित्व एवं चरित्र जब तक हम परमेश्वर के आत्मा से नया जन्म नहीं प्राप्त करते है, हमारा प्राण हमारे जीवन का संचालन करेगा हम परिस्थितियों को अपने मन के अनुसार मूल्यांकन करते हैं तथा अपना निर्णय करते है और अपने भावनाओं के प्रति अधिक घ्यान देते हैं और बहुत कम हम उन्हे हम पर शासन करने देते हैं ।

देह

शारीरिक देह आत्मा और प्राण का घर है । जो भी बात हमारे प्राण के अन्दर प्रवेश करता है वह निर्णय करता है कि जो कुछ हम शरीर में करते है । हमारी देह हमारे मन के विचारों को प्रतिक्रिया के रूप में प्रगट करती है । यह हमारे भावनाओं को व्यक्त करता है तथा हमारे अभिलाषाओं के निर्णय का उत्तर देता है ।

जब हम नया जन्म पा लेते हैं तो हमारी देह पवित्र आत्मा का निवास स्थान या मन्दिर बन जाता है । इसका अर्थ है कि हम परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई में जीवन बिता सकते हैं । वह हमारे मानवीय आत्मा में जीवन का आत्मा फूँक देता है और हमारे जीवन का सम्पूर्ण निर्देशन तथा प्रभाव बदल जाता है । अब हमारे प्राण और देह के अधिकार उसके सभी नकारात्मक शक्ति और प्रभाव स्थान पर हम परमेश्वर की सामर्थ को जान सकते हैं जो हम में कार्य करता है जैसे ही उसका आत्मा हमारी आत्मा को स्पर्श करता है ।

इसीलिये हमारी आत्मा सही तरीके से हमारे प्राण के उपर नियन्त्रण रख सकती है तथा हमारे मन भावनओं, तथा इच्छाओं को परमेश्वर के उद्देश्य के विषय बताएगे । तब देह आत्मा के द्वारा नियंत्रित किया जाएगा जो प्राण के द्वारा कार्य करता है । परमेश्वर इच्छा तथा उद्देश्य को पूर्ण करने के लिये।

"सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई है, देखों, वे सब नई हो गई ।" (2 कुरिन्थियों 5:17)

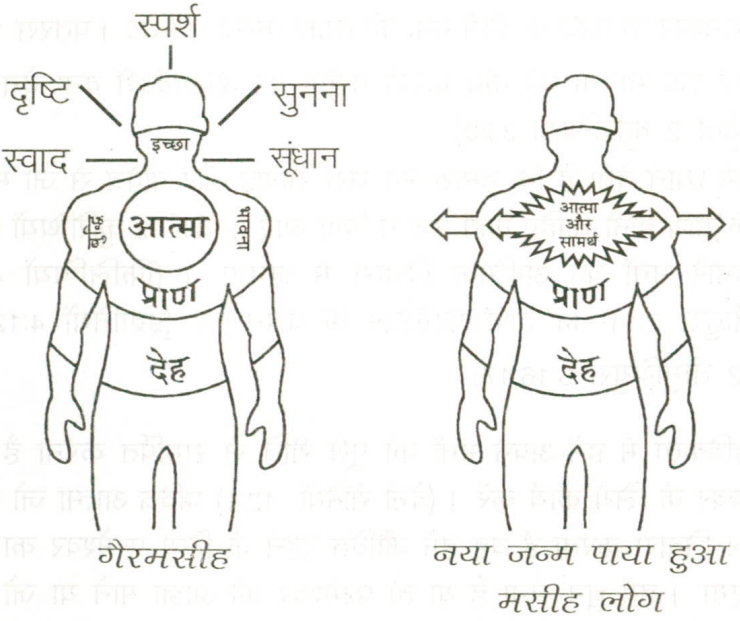

गैरमसीह *नया जन्म पाया हुआ मसीह लोग*

अपने के मन का नवीकरण

पाँच इन्द्रिय ज्ञान (अर्थात् स्पर्श करना स्वाद, दृष्टि, सूंधान तथा सुनना) सब मन में डाला जाता है तथा कमप्यूटर के समान कार्यवाही होती है । हम जो कुछ अपने मन में डालते हैं उसी के अनुसार सोचने लगते हैं तथा कार्य करने लगते हैं बाइबल हमें बताती है कि आगे को हम ऐसी बातें

अपने मन में न आने दें जिस प्रकार संसार में होता है परन्तु इस प्रकार की बातें न आने दें । इस प्रकार हमारे मन का नवीकरण होगा ।

"इस संसार के सदृश न बनों; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए" (रोमियों 12:2)

मन और देह (शरीर) परमेश्वर के आत्मा का द्वारा है जो सच्चे मसीही विश्वासी में निवास करता है । मन तो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कार्य नहीं करता वह हमारे आत्मिक जीवन के विकास में रुकावट का कारण है । हमारे लिये आवश्यक है :

– परमेश्वर के कार्य के लिये मनों को तैयार करना । (देखें । पतरस 1:13)
– हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देना है। (देखें 2 कुरिन्थियों 3:20)
– हमें ध्यान देना है कि हमारा मन उस सीधाई और पवित्र से जो मसीह के साथ होनी चाहिए कहीं भ्रष्ट न किए जाए । (देखें 2 कुरिन्थियों 11:3)
– हमारे मनों को आत्मिक विचारों में लगाए । (फिलिप्पियों 4:8,9 तीतुस 2:11–14 तथा परमेश्वर के वचन पर (इब्रानियों 4:12,13) (2 तीमुथियुस 3:16,17)

वास्तविकता में हमें अपने मनों को पूरी रीति से समर्पित करना है और परमेश्वर के लिये कार्य करें । (देखें रोमियों 12:1) पवित्र आत्मा जो हमारे अन्दर निवास करता है वह हमें जीवित रहने के लिये परमेश्वर का मार्ग बताएगा । हमें चुन लेना है या तो परमेश्वर की आज्ञा माने या जो कुछ हम स्वयं करना चाहते है वह करें । हमारा मन एक नया मसीही होने के कारण सोच विचार करने में चौकसी करता है जैसे मसीह को जानने से पहले किया करते थे । अब आप एक मसीही हैं, आप के सोच विचार में परिवर्तन की आवश्यकता है । इस के लिये अनुशासन तथा समय की आवश्यकता है । तब आप अपना मन परमेश्वर के अधीन कर देते हैं तथा उसके नेतृत्व को स्वीकार कर लेते हैं और अपने पुराने अभिलाषा की ओर कम ध्यान देते है और जो कुछ पाँच इन्द्रिय ज्ञान आप को करने के लिये

कहता है, जब आप का मन परमेश्वर की इच्छा की ओर अधिक होगा ।

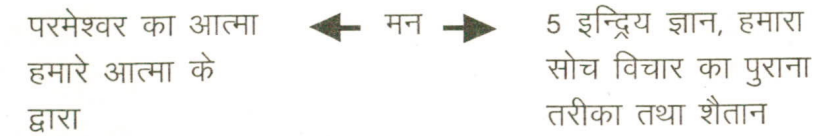

हमारे मन पर प्रभाव

प्रश्न एवं संकेतः

1. क्या हमारा मन बदलने की आवश्यकता है? (रोमियों 8:5–7 इफिसियों 2:3, 4:17–18)
2. क्या आप किसी बात के लिये सोच सकते हैं जो आप करते है या अकसर सोचतें हैं कि उसे बदलने की आवश्यकता है ?
3. क्या परमेश्वर बदंलने के लिये आप की सहायता करेगा ? (1 थिस्सलुनीकियों 5:23–24)
4. क्या यह आवश्यक है कि हमारा जीवन परमेश्वर के पवित्र आत्मा के नियन्त्रन के अधीन कर दें ? (रोमियों 8:12–14, 1 कुरिन्थियों 2:9–16)

प्रार्थना :–

सर्वशक्तिमान परमेश्वर मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ क्योंकि तू ने मेरी आत्मा को अपने पवित्र आत्मा के साथ जिन्दा कर दिया । मुझे मालुम है कि मुझे बदलने की आवश्यकता है मेरे सोच विचार में तथा मेरे कार्य में । मैं अपना जीवन तेरे पवित्र आत्मा के नियत्रण के आधीन कर देता हूँ जो मुझ में निवास करता है । तू मूझे बदल दे जैसे तू जानता है कि मुझे बदलने की आवश्यकता है ताकि मै तेरी सेवा कर सकुं और भी उत्तम तरीके से और तेरी इच्छा के अनुसार जीवन बिता संकू । मुझे वैसा ही बना जैसा तू चाहता है शरीर में, प्राण में तथा आत्मा में । मैं यह प्रार्थना यीशु के पवित्र नाम में करता हूँ । आमीन ।